

---

Shridhara Prarthana

श्रीधरप्रार्थना

Document Information

---

Text title : Shridhara Prarthana

File name : shrIdharaprArthanA.itx

Category : deities\_misc, gurudev, shrIdharasvAmI

Location : doc\_deities\_misc

Proofread by : Paresh Panditrao

Description/comments : shrIdharasvAmI stotrANi. shrIdharasandesah

Latest update : January 14, 2023

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

January 15, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीधरप्रार्थना



त्रिलोकनाथं जगदादिवन्द्यं सनातनं शाश्वतशान्तमूर्तिम् ।  
अनाथरक्षं ह्यभयं विशोकं सदा नमः श्रीधर ते स्वरूपम् ॥ १ ॥

अचिन्त्यरूपं निजचिद्विलासं दिवाकरं दीनमतिप्रकाशम् ।  
अनामयं चण्डविभेदनाशं सदा नमः श्रीधर ते स्वरूपम् ॥ २ ॥

भर्जनं मोहबीजानां मर्जनं सुखसम्पदाम् ।  
तर्जनं कामदूतानां श्रीधरेति सुगर्जनम् ॥ ३ ॥

यस्मिन्सर्वाणि भूतानि जायन्ते ज्ञानतोमृषा ।  
ज्ञाते सति न किञ्चिद्वै तमहं श्रीधरं भजे ॥ ४ ॥

अखण्डं सच्चिदानन्दं परिपूर्णं परात्परम् ।  
निर्गुणं निष्कलं ब्रह्म तं वन्दे श्रीधरं गुरुम् ॥ ५ ॥

अप्रमेयसुखस्फूर्ते निर्मलज्ञानभास्कर ।  
चिन्मूर्ते श्रीगुरो नौमि सदा ते पादपङ्कजम् ॥ ६ ॥

आकाशवत्सर्गगतं सुसूक्ष्मं सच्चिन्मयं निष्क्रियमेकमाद्यम् ।  
अजं विभुं नित्यमुपाधिहीनं नमाम्य श्रीधरसद्गुरुं तम् ॥ ७ ॥

येन व्याप्तमिदं सर्वं जगत्स्थानवरजङ्गमम् ।  
तमस्माकं गुरुं वन्दे श्रीधरार्यं दयानिधिम् ॥ ८ ॥

नमस्ते जगदाधार नमस्ते भक्तवत्सल ।  
नमस्ते कृपया पूर्णं भो श्रीधर नमोस्तु ते ॥ ९ ॥

जय देव जगन्नाथ जय श्रीधर शाश्वत ।  
जय सर्वगुणातीत जय नित्य निरञ्जन ॥ १० ॥

जय सच्चिन्मयानन्त जय अद्वय चिन्मय ।  
जय नाथ कृपासिन्धो जय भक्तार्तिभञ्जन ॥ ११ ॥


जय पूर्ण परानन्द जयार्तत्राण श्रीधर ।  
जय दुस्तर-भवार्तीनां सागरतारण प्रभो ॥ १२ ॥  
प्रसीद मे श्री श्रीधरार्य संसारभ्रमवारक ।  
भवाज्ञानं क्षयं नीत्वा श्रीधरार्य कृपां कुरु ॥ १३ ॥  
इति श्रीधरप्रार्थना समाप्ता ।  
(मार्गशिर्ष - १८८८)

Proofread by Paresh Panditrao

---

——  
*Shridhara Prarthana*

pdf was typeset on January 15, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

